राज्य परिशिष्ट 10

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]
गृहस्थ, मजदूर और फसल

मत्ती 13:51-52 में "गृहस्थ का दृष्टान्त"
और मत्ती 9:35-38 में "मजदूर और फसल का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य में गवाह होने के विषय में बताता है

क. गृहस्थ का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 13:51-52

यीशु इस दृष्टान्त को *एक कथन* के रूप में कहते हैं। कथन इस विषय में है कि व्यवस्था के सच्चे शिक्षक कौन हैं।

यीशु के समय में, व्यवस्था के कई शिक्षक (रब्बी) थे, जिन्हें व्यवस्था के अन्य शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। वे विशेष रूप से औपचारिक व्यवस्था पर ध्यान देते थे और कई बार इन व्यवस्थाओं के स्पष्टीकरण और अनुप्रयोगों को बढ़ाया। इस तरह "प्राचीनों की परम्परा" अस्तित्व में आई (मत्ती 15:2, 25 अध्याय देखें)। व्यवस्था के ऐसे शिक्षक सच्चे शिक्षक नहीं थे।

यीशु कहते हैं कि व्यवस्था के सच्चे शिक्षक वे हैं जिन्हें परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित मामलों में अच्छी तरह से निर्देश दिया गया है! "परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित मामलों में निर्देश दिया जाना" का शाब्दिक अर्थ है, "परमेश्वर के राज्य में एक चेले का बनाया जाना"। "एक चेला" यीशु मसीह, राज्य के राजा का अनुयायी और सीखने वाला होता है! "राज्य" लोगों के हृदयों और जीवन में परमेश्वर की प्रभुता या शासन है, जिसके परिणामस्वरूप एक कलीसिया के रूप में उनकी रचना और वर्तमान समय के समाज में उनके प्रभाव और दूसरे आगमन के बाद नये स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनका पूर्ण उद्धार होता है।

व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक वह है जो यीशु मसीह का अनुयायी होता है, न कि किसी शिक्षक (व्यवस्था के), धर्मशास्त्री या कलीसिया के सम्प्रदाय का। व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक, प्राचीनों की परम्पराओं (पहले के रब्बी) के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित प्रत्येक वस्तुओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है! व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक व्यक्तिगत रूप से अपने स्वयं के हृदय और जीवन पर परमेश्वर की प्रभुता या शासन को स्वीकार करता है, वह यीशु मसीह का चेला बनकर उसका अनुसरण करता है, और लगातार यीशु मसीह से, विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य से जुड़ी बातों को सीखता रहता है।

---

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

गृहस्थ वह व्यक्ति होता है जो घर के मालिक के सभी मामलों और संपत्ति का प्रबंधन करता है।

भण्डारग्रह घर का वह स्थान है, जहाँ मूल्यवान संपत्ति रखी जाती है। बेशक, पुरानी वस्तुओं के साथ-साथ भण्डार में नई वस्तुएँ भी होंगी। जब इन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, तो घर का मालिक या प्रबंधक उन्हें भण्डार से बाहर निकालते हैं। इन तत्वों को समझना आसान है।

---

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 13 में पायी जाती है।**

मत्ती 13 में यीशु के आठ दृष्टान्त पाये जाते हैं। लोगों की समझ में नहीं आने वाले दृष्टान्त "पहेलियाँ" बनकर ही रह जाते हैं (मत्ती 13:11-15)। इसलिए यीशु पूछते हैं, "क्या तुम यह सब बातें समझ गए?" (मत्ती 13:51)।

(2) **दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:52 में लिखी हुई है।**

(3) **इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त में ही दिया गया है।**

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। यीशु ने इस दृष्टान्त का कोई विवरण नहीं दिया है। इसलिए हमें कहानी या संदर्भ से प्रासंगिक विवरणों का अर्थ निकालना चाहिए।

गृहस्थ या प्रबंधक। यह एक प्रासंगिक विवरण है क्योंकि यह व्यवस्था के प्रत्येक सच्चे शिक्षक को दर्शाता है, अर्थात् बाइबल के प्रत्येक सच्चे शिक्षक या बाइबल के विद्यार्थी को। यहाँ व्यवस्था के शिक्षक यीशु मसीह के चेलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, विशेष रूप से वे जो पुराने नियम के विद्वान पुरुषों के घेरे से बाहर आते हैं, अर्थात् व्यवस्था के पूर्व शिक्षक या "रब्बी"। बाद में, प्रेरित पौलुस व्यवस्था के ऐसे शिक्षक का एक उदाहरण था।

भण्डार और उसका ख़जाना। यद्यपि इन तत्वों की व्याख्या नहीं की गई है, वे प्रासंगिक हैं और एक व्यक्ति के भीतर के सभी आत्मिक ख़जाने को दर्शाते हैं जो उसने अपने पूरे जीवन में जमा किया है। "पुरानी वस्तुएँ" वे

सभी आत्मिक ख़जाने हैं जो उसने पुराने नियम के अपने अध्ययन से अर्जित किए हैं। "नई वस्तुएँ" वे सभी आत्मिक ख़जाने हैं जो उसने यीशु मसीह के चेले होने के दौरान जमा किए थे, यह वस्तुएँ, जो इस बीच नए नियम में दर्ज की गई हैं। पुराने नियम में कई आत्मिक ख़जाने हैं, जैसे कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और प्रेम और धार्मिकता। व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक, यानि बाइबल का एक सच्चा शिक्षक या छात्र, पुराने नियम और नए नियम दोनों में निहित आत्मिक ख़जाने को बाहर लाने में सक्षम होगा। एक ओर, वह बाइबल का छात्र है और दूसरी ओर, वह बाइबल का शिक्षक है जो इन पुराने और नए आत्मिक ख़जाने को अन्य लोगों को सिखाता है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:51-52 में गृहस्थ का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में चेला बनाने" और "परमेश्वर के राज्य में गवाह होने" के विषय में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार है। "परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों का कर्तव्य व उत्तरदायित्व है कि वे पुराने और नए नियम दोनों का अध्ययन करें और उसमें छिपे सभी आत्मिक ख़जाने को बाहर निकालें। उनका कर्तव्य और उत्तरदायित्व यह भी है कि वे इन ख़जानों को अपने जीवन में लागू करें और दूसरों तक भी इस ख़जाने को पहुँचाएँ (उन्हें सिखाएँ)।"

चेला बनाना और गवाह बनना परमेश्वर के राज्य की दो मूलभूत विशेषताएँ हैं। परमेश्वर के राज्य में शिक्षक बाइबल का अध्ययन करते हैं और उसमें पाए जाने वाले सभी पुराने और नए ख़जाने को बाहर लेकर आते हैं। उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए, विश्वासपूर्वक बाइबल के पुराने अनन्त सिद्धांतों को थामे रहना चाहिए, और इन अनन्त सत्यों को उन नई स्थितियों पर लागू करने में सक्षम होना चाहिए जिनका वे सामना करते हैं। और जो कुछ उन्होंने सीखा उसे वे दूसरों तक पहुँचाएँ।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गधांश क्या सिखाते हैं, दृष्टान्तों से इनकी तुलना करें?

एज्रा 7:10 – एज्रा ने स्वयं को तीन क्षेत्रों में अनुशासित किया : पहला, उसने परमेश्वर के वचन का अध्ययन

किया। दूसरा, उसने सीखी हुई बातों को अपने जीवन में लागू किया। तीसरा, उसने सीखी हुई बातें दूसरों को सिखाईं। बाइबल के प्रत्येक शिक्षक के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे स्वयं को इन तीन क्षेत्रों में अनुशासित करें!

मत्ती 23:3–4 – यीशु ने व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और फरीसियों को फटकार लगाई, क्योंकि जिन बातों का प्रचार वे करते थे, उन्हें वे स्वयं अपने जीवन में लागू नहीं करते थे। यह बाइबल के प्रत्येक शिक्षक के लिए एक चेतावनी है!

प्रेरितों के काम 20:18–27 – लोगों के सामने पौलुस ने एक पारदर्शी जीवन जीया, उसने दीनता के साथ प्रभु की सेवा की। उसने लोगों को सिखाया कि पुराने और नए नियम के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा क्या है। लेकिन उसने उन्हें ऐसी बातें नहीं सिखाईं जो उनके लिए मददगार न हों।

1 कुरिन्थियों 4:6 – उसने स्वयं को केवल उन्ही बातों तक सीमित रखा जो बाइबल में लिखी हुई हैं। उसने बाइबल में लिखी हुई बातों में से न ही कुछ बढ़ाया और न ही कुछ घटाया (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)।

---

6. **दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।**

चर्चा करें। इस दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों या संदेश को संक्षेप में लिखिए : यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या किस पर *विश्वास करना* और हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) **परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।**

वचन का शाब्दिक अर्थ यह है कि, "हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, *उसे हमेशा* (उसके जीवन के नियुक्त समय पर) के लिये प्रशिक्षित किया गया है" परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक शिक्षक (या चरवाहे या प्राचीन या सेवक) को परमेश्वर के राज्य का चेला होना चाहिए! उन्हें व्यक्तिगत रूप से अपने स्वयं के हृदय और जीवन पर यीशु मसीह की प्रभुता या शासन को स्वीकार करना चाहिए। जबकि व्यवस्था का एक यहूदी शिक्षक पुराने नियम का एक स्वीकृत छात्र था और विशेष रूप से पुराने नियम की सभी परम्पराओं को मानता था, जो निर्वासन और यीशु मसीह के समय के बीच प्राचीनों (रब्बी) द्वारा मानी जाती थी, परमेश्वर के वचन के अनुसार मसीही शिक्षक को परमेश्वर के राज्य की बातों के विषय में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जैसा कि नए नियम में और विशेष रूप से पर्वत पर दिए गए उपदेश में और यीशु मसीह के सभी दृष्टान्तों में पाया जाता है।[1] उसे इस बात के लिये प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि परमेश्वर के राज्य का स्वभाव कैसा है, इसमें प्रवेश कैसे किया जा सकता है, इसमें कैसे रहना चाहिए और संसार के दूसरों लोगों तक परमेश्वर के राज्य का प्रचार कैसे किया जाना चाहिए।

(2) **परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों के ऊपर अपने घरों के लिए वस्तुओं का प्रबन्ध कराने का उत्तरदायित्व है।**

यीशु ऐसे शिक्षकों या सेवकों का सम्मान करते हैं, जिन्हें परमेश्वर के राज्य के, शिक्षक होने के लिए या प्रबन्धक होने या घरों के स्वामी के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। वे बहुत ही महत्वपूर्ण लोग हैं क्योंकि उनके पास अपने घरों के लिए वस्तुओं का प्रबन्ध कराने की ज़िम्मेदारी है, अर्थात्, उन लोगों की देखभाल के लिये जिन्हें परमेश्वर ने सौंपा हैं। परमेश्वर ने उनकी देखभाल के लिए अपना बहुत कीमती ख़ज़ाना सौंपा है (मत्ती 2:11; 6:19–21; 12:35; 13:35; 19:21)। "तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है" (मत्ती 13:11)। इस ख़ज़ाने में बाइबल का ज्ञान, यानी मसीही सिद्धान्त (शिक्षा) और जीवन का ज्ञान है।

---

[1] यही कारण है कि DOTA में दृष्टान्तों का अध्ययन इतना महत्वपूर्ण है!

यह मसीही सेवकों का कार्य और उत्तरदायित्व है कि वे इस ज्ञान को अन्य लोगों तक पहुँचाएँ, उन लोगों से आरम्भ करें जो उनके अपने घर या परिवार और उनकी मण्डली से सम्बन्धित हैं।

(3) परमेश्वर के राज्य में शिक्षक अपने भण्डार से नए और पुराने ख़ज़ाने को बाहर लाने की क्षमता रखते हैं।

व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और यीशु मसीह के बीच कुछ निम्नलिखित अन्तर थे।

यीशु मसीह ने सत्य बोला (यूहन्ना 14:6; 18:37)। यहूदी शिक्षकों की शिक्षाएँ भ्रष्ट और कपट से भरी हुई थीं। उन्होंने व्यवस्था (परमेश्वर के वचन) में अपने स्वयं के कई विचारों और निर्णयों को जोड़ा, या परमेश्वर के वचन (मत्ती 5:17-48) के आत्मिक महत्व को पूरी तरह से नज़रअंदाज कर दिया।

यीशु मसीह ने जीवन और मृत्यु, अनन्त उद्धार और शाप से जुड़ी हुई **महत्वपूर्ण बातों को बताया** (मत्ती 25:46; की तुलना पौलुस के विषय में प्रेरितों के काम 20:27,20 से करें)। यहूदी शिक्षक अक्सर छोटे-मोटे मामलों में (मत्ती 23:23) अपना समय बर्बाद करते थे।

यीशु मसीह की शिक्षाओं में एक पद्धति थी (उदाहरण के लिए, पर्वत पर उपदेश और उसके अन्य उपदेश)। जैसा की तालमुड (Talmud) ने बताया है कि यहूदी शिक्षक अक्सर भड़क उठते हैं।

यीशु मसीह ने दृष्टान्तों (मत्ती 13:3-51) और ठोस उदाहरणों (मत्ती 5:21-6:24) का उपयोग करके लोगों को जिज्ञासु बनाया। यहूदी शिक्षकों के उपदेश अक्सर धूल के समान सूखे होते थे।

यीशु मसीह ने लोगों से महान प्रेमी के रूप में बात की और उनमें कार्य किया (आश्चर्यकर्मों द्वारा), जो अपने सुननेवालों के वर्तमान और अनन्त उद्धार के लिये चिन्तित था। यहूदी शिक्षकों में स्वयं के लिए अति प्रेम था, लेकिन दूसरों के लिए उनके पास प्रेम की कमी थी जैसा कि बाइबल के कई अंशों से स्पष्ट है (मत्ती 23:1-33)।

यीशु मसीह ने अधिकार से बोला और काम किया, क्योंकि उन्हें उपदेश और सामर्थ्य सीधे परमेश्वर पिता के हृदय, मन (और स्वयं के ईश्वरीय रूप से) और वचन से प्राप्त होता था (मत्ती 5:17-18; 7:28-29; 21:12-14; यूहन्ना 12:49-50)। यहूदी शिक्षक लगातार चूक करनेवाले मानव स्रोतों से शिक्षा को प्राप्त कर रहे थे, व्यवस्था के एक शिक्षक दूसरे उस व्यवस्था के शिक्षक के हवालों का उल्लेख करते थे जो कि अन्य शिक्षक के हवालों का उल्लेख करते थे! यीशु ने बहते हुए जल के झरने को उनके लिए बहाया, जबकि उन्होंने टूटे हुए हौदों से पानी निकालने की कोशिश की (यिर्मयाह 2:13)।

परमेश्वर के राज्य के शिक्षकों और सेवकों को निरन्तर उस जल से ही पीना चाहिए जो यीशु मसीह स्वयं उन्हें देते हैं (यूहन्ना 4:14; प्रकाशितवाक्य 22:17)। परमेश्वर के अनुग्रह से, उन्हें हर समय अपने दृष्टिकोण में ताज़ा बने रहना चाहिए, और बाइबल के उन अनन्त प्राचीन सत्यों को नई परिस्थितियों पर लागू करना चाहिए, जिनका वे सामना करते हैं।

ख. मज़दूर और फसल का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 9:35-38

1. **दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।**

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

फसल। फसल के लिए सबसे बड़ा खेत होता है, जो संसार के सभी देशों में पाया जाता है! बढ़ते हुए बीज को फसल बनाने के लिए उस पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसी बीच, इसे तैयार करने लिए बहुत कुछ कार्य करना होता है (जिसमें – बोना, उगाना, पानी देना, जंगली पौधों को हटाना, सूरज की तेज़ तपन, पक्षियों और चोरों से बचाना आदि कार्य शामिल हैं)।

मज़दूर। ये वे मजदूर हैं, जिन्हें खेत पर काम करने के लिए हर दिन रखा जाता है। हालाँकि, इस कहानी में, काम करने के लिए बहुत कम मज़दूर हैं।

---

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 9:35–36 में पायी जाती है।**
यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि यीशु मसीह की गलील की महान सेवकाई की एक सारांश की समीक्षा में पाई जाती है। यह सेवकाई मत्ती 4:12 से 15:20 में और दिसंबर 27 ई० से अप्रैल 29 ई० के बीच पाई जाती है। "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा" (मत्ती 4:23; 9:35)। और कहा, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। और यीशु ने चेले बनाए और उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाला बनाऊँगा" (मरकुस 1:17)। इस पर भीड़ ने बड़े उत्साह से इस बात का स्वागत किया, लेकिन व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों ने और भी अधिक ईर्ष्या से उसका विरोध किया।

"जब यीशु ने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे।" तब उस ने अपने चेलों से कहा, "पक्के खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मज़दूर भेज दे।" (मत्ती 9:36–38)।

व्याकुल। मूल रूप से इस शब्द का अर्थ है "आलोचना करना या शारीरिक रूप से दण्डित करना"। इसका उपयोग इस्राएल के लोगों की भीड़ के लिए किया जाता है, जो व्याकुल थी, जिसे दबाव में रखा जाता था, वे थके और भटके हुए थे, फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था (मत्ती 11:28)। इस्राएल के ये धर्मगुरु सब्त, धार्मिक पर्वों, माथे पर ताबीज़, और वस्त्रों की चौड़ी कोरों और झालरों और सिर पर प्रार्थना के वस्त्रों इत्यादि से जुड़े 613 मानव निर्मित व्यवस्थाओं के बोझ को उन लोगों पर लगातार डाल रहे थे (मत्ती 23:4–5)। ये धार्मिक शिक्षक अन्धे मार्गदर्शक थे जिन्होंने लोगों को गुमराह किया (मत्ती 15:14)। इसके विपरीत, यीशु मसीह ने व्यवस्था के गंभीर विषयों जैसे न्याय, दया और विश्वासयोग्यता पर जोर दिया (मत्ती 23:23)।

भटके हुए। मूल रूप से इस शब्द का अर्थ है "हतोत्साहित होना", "भूमि पर असहाय पड़े रहना", थके और खोये रहना, तिरस्कृत और त्यागे हुए!

चरवाहे के बिना भेड़। इस्राएल में लोगों की भीड़ भेड़ों के उस बड़े झुण्ड की समान थी, जिसका न कोई रखवाला था, न ही किसी को उनका ख़्याल था, और भटक जाने पर उनका कोई ढूढ़ँने वाला नहीं था (यहेजकेल 34)। वे भूमि पर थककर लेटे हुए थे, और जंगली जानवरों, हवा और मौसम के ख़तरों के बीच, भूखे और प्यासे थे। उन्हें सच्चे मार्गदर्शक और करूणामय चरवाहे की आवश्यकता थी!

इस समय पर, यीशु ने मज़दूरों और फसल के दृष्टान्त को बताया।

(2) **दृष्टान्त की कहानी मत्ती 9:37 में लिखी हुई है।**

(3) **इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 9:38 और अध्याय 10 में दिया गया है।**

मत्ती 9 में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे मज़दूरों की बढ़ोतरी के लिए *प्रार्थना* करें।
मत्ती 10 में, उन्होंने अपने चेलों को मज़दूर बनने की *शिक्षा* दी।

---

3. **दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।**

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें।

यीशु किसी विशेष अर्थ का विवरण नहीं देते हैं। इसलिए विवरण को संदर्भ से समझने की आवश्यकता है।

फसल। इस प्रसंग में, यीशु इस्राएल के लोगों की भीड़ को देख रहा था। "फसल" इस्राएल में सभी खोए हुए लोगों को दर्शाती है (मत्ती 10:6)। हालाँकि, इस परिस्थिति में, यह संसार के सभी खोए हुए लोगों को भी संदर्भित करता है (मत्ती 24:14; 28:18-20)। यह इस प्रकार एक प्रासंगिक विवरण है।

मजदूर। इस प्रसंग में, यीशु उन लोगों के विषयों में बात कर रहे थे, जिन्हें परमेश्वर इस्राएल और संसार के सभी देशों में खोए हुए लोगों तक पहुँचने के लिए भेजेगा (मत्ती 10:5-7; 28:18-20)। यह इस प्रकार एक प्रासंगिक विवरण है।

---

4. **दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।**

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 9:35-38 में मजदूर और फसल का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में गवाह" होने के विषय में बताता है

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। "लोगों के उस बड़े समूह जो एक साथ मिलकर उपज को दर्शाते हैं और मज़दूरों की कमी को जो इन उपज को इकट्ठा करेंगे, के बीच भिन्नता पाई जाती हैं।"

गवाह होना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताओं में से एक है और गवाही देना मजदूरों का विशेष कार्य है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर अपने खेत की फसल के लिए और मज़दूरों को भेजें। यीशु ने मज़दूरों की संख्या और उनकी गुणवत्ता दोनों पर जोर दिया। उन्हें कई और मज़दूरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें उन मजदूरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है (मानवीय प्रशिक्षण केन्द्रों के विपरीत)। मज़दूरों (स्थानीय और संसारभर की कलीसिया में) को स्व-नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन वे परमेश्वर द्वारा (बाइबल की शिक्षा के अनुसार) बुलाए और चुने होने चाहिए। वे ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिनके हृदय में संसार के खोए हुए लोगों के प्रति दया की भावना है।

---

5. **दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।**

पढ़ें यशायाह 55:1–7; 61:1–3; यूहन्ना 3:6; रोमियों 10:12–13

खोज और चर्चा। बाइबल के प्रत्येक दृष्टान्त से क्या सीख मिलती है, इसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है ?

ध्यान दें। वे उन सभी महत्वपूर्ण सत्यों को सिखाते हैं जिनका सुसमाचार पापियों तक पहुँच सकें और परमेश्वर स्वयं उनके मन फिराने और उद्धार में प्रसन्न होता है।

(इन वचनों को भी पढ़ें – 1 राजा 8:41–43; भजन 72:8–15; नीतिवचन 11:30; दानिय्येल 12:3; मीका 7:18–20; मलाकी 1:11; मत्ती 22:9; 23:37; 28:19–20; लूका 15; 19:10; यूहन्ना 10:16; प्रेरितों के काम 4:12; 1 कुरिन्थियों 9:22; 2 कुरिन्थियों 5:20–21; 1 तीमुथियुस 1:15; प्रकाशितवाक्य 3:20)।
